ज्ञानाञ्जलि

प्रधान सम्पादक 'प्रेरक'

डॉ. विवेकानन्द शर्मा "ज्योतिषाचार्य"

प्रधान आचार्य, हिन्दू कल्चर एवं वेलफेयर सोसायटी

डर्वी शहर, इंग्लैण्ड

सम्पादक

डॉ. भेषराज शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,

संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान–304022

शर्मा पब्लिशिंग हाऊस

जयपुर (राज.)

पुस्तक : **ज्ञानाञ्जलि**

प्रधान सम्पादक : **डॉ. विवेकानन्द शर्मा**

प्रकाशक : **शर्मा पब्लिशिंग हाऊस**
3374, गोविन्द राय जी का रास्ता
चाँदपोल बाजार, जयपुर–302001

ISBN : **81–7949–017–3**

प्रथम संस्करण : अगस्त–2020

मूल्य : 500/

© : सम्पादकाधीन (सर्वाधिकार सुरक्षित)

शब्द सज्जा : **श्री टाइपिंग सेन्टर**
निवाई, टोंक (राज.) 304021
Email : shreetyping2020@gmail.com
Contact us : 09667111426, 07976685740

मुद्रक : **शीतल प्रिन्टर्स, जयपुर**

विषय–सूची

क्र.सं.	विषय–वस्तु	लेखक	पृ.सं.
1.	भारतीय तथा पाश्चात्य ज्योतिष : एक समीक्षा	डॉ. विवेकानन्द शर्मा	1
2.	वैदिक साहित्य में नारी की महत्ता	डॉ. लम्बोदर मिश्र	6
3.	पाठ्यसहगामिक्रियासु समस्यापूर्तिविमर्शः	प्रो. कुलदीप शर्मा	13
4.	संस्कृतवाङ्मय में व्यक्त न्याय दण्ड व प्रशासन व्यवस्था की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता व तुलनात्मक अध्ययन	प्रो. सुभाष चंद्र गुप्ता	19
5.	स्मृतिषु दायाधिकारः	डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी	34
6.	अनुभव प्रमाण की व्यावहारिकता : एक अध्ययन	डॉ. डॉली जैन	40
7.	Food Habits And Consciousness : Inner Life of The Body And Mind	Dr. Sandhya Gupta & Dr. Navya Pande	49
8.	स्मृतियों में दण्ड व्यवस्था – एक विमर्श	डॉ. जगदीश भारद्वाज	64
9.	श्रौतस्मार्तकुण्ड विमर्शः	डॉ. शम्भु कुमार झा	81
10.	राजस्थान जल विमर्श	डॉ. सीमा शर्मा	95
11.	साधुत्वज्ञानविषया सैषा व्याकरणस्मृतिः	श्री राधेश्याम शर्मा	108
12.	विधि का अध्ययन एवं अध्यापन एक जीवंत अनुभव और सारगर्भित सुझाव	डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव	114
13.	नैतिक शिक्षा का स्रोत संस्कृत – धम्मपद के सन्दर्भ में	डॉ. विनीता पाण्डेय	118

14.	ज्ञानविज्ञानविमर्शः	डॉ. राघवेन्द्र शर्मा	123
15.	मृच्छकटिप्रकरण में वर्णित न्यायिकव्यवस्था	डॉ. हेमन्त शर्मा	133
16.	संस्कृत साहित्य में श्रीराधा के रूप	डॉ. नौनिहाल गौतम	142
17.	संस्कृत भाषा विमर्श	डॉ. भेषराज शर्मा	156
18.	वेदों में गो तत्त्व	डॉ. महेश कुमार शर्मा	176
19.	यथार्थ अनुभवों में शब्दप्रमाण की याथातथ्य विचार : भारतीय दर्शन की परिप्रेक्ष्य में	केशव लुईटेल	181
20.	ज्योतिष शास्त्र में फलित–सिद्धान्त	डॉ. मेघराज शर्मा	195
21.	शैक्षिक–नवाचारः	डॉ. आशीष कुमार शर्मा	205
22.	पपीते की वैज्ञानिक खेती	नरेश कुमार अग्रवाल	212
23.	ज्योतिष में रोग चर्चा	श्रीमती शोभा शर्मा	230
24.	बृहत्संहिता में वृक्षायुर्वेद	प्रियंका देवी	238
25.	वैदिककाले ज्योतिषज्ञानं फलितज्योतिषञ्च	मुकेश कुमारः पारीकः	246
26.	ज्योतिश्शास्त्रेण सह वास्तुशास्त्रस्य सम्बन्धः	योगेन्द्र शर्मा	251
27.	कष्ठे सर्वेश्वरो यस्य हनुपदेशसुधा मुखे	अनिरुद्ध दाधीच	257
28.	ज्योतिष शास्त्र और ब्रह्मगुप्त विमर्श	राघवेन्द्र त्रिवेदी	262

संस्कृत साहित्य में श्रीराधा के रूप

डॉ. नौनिहाल गौतम
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
मो.– 09826151335, ईमेल– dr.naunihal@gmail.com

विशाल संस्कृत साहित्य में वृषभानुजा कृष्णवल्लभा राधा का वर्णन वैदिक साहित्य, पुराण, श्रव्यकाव्य और दृश्यकाव्य में प्राप्त होता है। इनमें राधा विविध पक्ष वर्णित हैं, किन्तु मधुर तथा हृदयाह्लादक होने के कारण रासक्रीडा में कृष्ण के साथ उनकी उपस्थिति प्रसिद्ध हो गयी है। कृष्ण की सहचरी राधा धार्मिक सम्प्रदायों में आराध्या के रूप में स्वीकृत हैं। संस्कृत साहित्य में उनके विविध रूपों का चित्रण हुआ है। वैदिकवाङ्मय से उसका सम्बन्ध नाम या सञ्ज्ञा के आधार पर है। वैदिकवाङ्मय में राधस् तथा राधा पदों के विभिन्न विभक्तियों के रूप उपलब्ध हैं। उनसे राधा का नामकरण स्वीकार किया जाने पर उनके अर्थों के आधार पर राधा का रूप एक समृद्धि, ऐश्वर्य के वाचक अर्थ में होता है। पुराण साहित्य तथा लौकिक साहित्य में राधा का चरित तथा विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं।

संस्कृत साहित्य में प्राप्त होने वाले श्रीराधा के रूपों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

1. बालिका – राधा के बालरूप के दर्शन पुराण तथा लौकिक साहित्य में होते हैं। कहीं उसके भूमि पर लोटने का वर्णन है जैसे पद्मपुराण (5–71–32), कहीं सखियों द्वारा पालने में झुलाये जाने का वर्णन है